

‘बोलो मेरे राम’ दोहा-संग्रह में राजनीतिक यथार्थ

Santosh Kumari*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi Dayanand University, Rohtak, Haryana

सार - साहित्यकार समाज का दीपक होता है जो स्वयं जलते हुए ज्ञान रूपी प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करता है। ऐसे ही साहित्यकारों में डॉ. रामनिवास ‘मानव’ का नाम आता है। उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य में योगदान दिया है। आधुनिक युग को राजनीति में विश्व-व्यापक गतिविधि के रूप में जाना जाता है। मानव इतिहास में एक युग वह भी था, जब जनसाधारण का राजनीति से किसी प्रकार का प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता था और राजनीति शाहोंमहलों तक ही सीमित रहती थी मगर आज राजनीति का स्वरूप बदल गया है आज के युग में शायद ही कोई व्यक्ति हो जो राजनीति से अछूता हो। डॉ. ‘मानव’ का विचार है कि राजनीति में रुचि न रखने वालों से भी राजनीति जुड़ी हुई है। आज राजनीति का क्षेत्र बहुत ही व्यापक हो गया है।

-----X-----

वर्तमान सत्ताधारी राजनीति के सहारे समाज का मनचाहा शोषण करता है। कवि ने अपने दोहा-संग्रह ‘बोलो मेरे राम’ में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण व्यक्त किया है। सर्वप्रथम देश की राजधानी को माध्यम बनाते हुए राजनीति स्थिति का अवलोकन किया है। वहां की संसद, संसद में हुए कारनामे, पेसे और गाड़ियों के बलबूते पर नेताओं की खरीद-फरौद, संसद में नोटों का उछलना और विविध घोटालों में शामिल नेताओं आदि पर अपने व्यंग्य बाण मारते हुए अपने भाव को प्रस्तुत किया है। आज के नेता दुष्ट, नीच, दम्भी, अवगुणी और सत्ता में चूर है। जो मनमानी ढंग से समाज का शोषण करते हैं। जिन लोगों ने उन्हें सत्ता पे बैठाया, उन्हीं लोगों का शोषण करते हैं। कवि ने इन्हें थाली में छेद करने वाले दुष्ट बताया है। ये राजनीति के नाम पे धमाल करते हैं।

आधुनिक घिनौनी राजनीति ने मनुष्य के हजारों-हजार बार टूटने की स्थितियां निर्मित की है। इस परिवेश में जीने को बाह्य मनुष्य की स्थिति के प्रति डॉ. ‘मानव’ के हृदय में करुणा का भाव है। अव्यवस्था, चारों ओर छाये भय तथा आतंक ने जीवन को नरक बना दिया है। सीधे-सादे, भोले-भाले लोगों के लिए आज जीना कठिन होता जा रहा है। आज राजनेता अपनी राजनीतिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए आदमी को कहीं का नहीं छोड़ा। कवि ने लिखा है:

क्या नेता, क्या नीतियां, क्या सत्ता, क्या तन्त्र।

सरे बनकर रह गये, लूटपाट का मन्त्र॥ 1

भारतीय राजनीति दिनों-दिन भ्रष्ट होती जा रही है। राजनेता अपने स्वार्थ के आगे जनता को अंधेरे में धकेल रहे हैं। परिस्थितियाँ दिनों-दिन बिगड़ रही हैं। वर्तमान नेता अपने मूल्य और मर्यादा बिल्कुल भूल गए हैं। आज के नेता और गुंडों में कोई अन्तर नहीं है। अपने संस्कारों को भूलकर एक दूसरे को गाली-गलौच देते हैं। धैर्य को त्याग कर और अपने कर्तव्यों को दरकिनार करते हुए संसद जैसे पवित्र स्थान पर मुक्के लात चलाते हैं। संसद को देखकर लगता है जैसे यह जंगलात बन गई है।

वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में राजनेताओं ने जनमानस को कभी धर्म के नाम पर, कभी जाति के नाम पर, तो कभी भाषा अथवा क्षेत्र के नाम पर लड़वाया है। आज नेता लोकतन्त्र के नाम पर, लोगों को शोषण करते, इन्हें लूटने, बरगलाने में महारत हासिल कर चुके हैं। डॉ. ‘मानव’ प्रजातन्त्र के नाम पर देश की प्रजा का भाग्य बन चुकी शोषण वृत्ति को, संवेदना के साथ, अपने काव्य में स्थान दिया है। गागर में सागर भरने वाली प्रमुख रचना ‘बोलो मेरे राम’ में कवि ने माना कि आधुनिक नेताओं के जीवन का एकमात्र लक्ष्य सत्ता प्राप्त करता हो गया है। यही वजह है कि वे जन कल्याण की अपेक्षा स्वकल्याण के मार्ग पर चल रहे हैं। भ्रष्ट नेता बापू के देश ‘सोने की चिड़ियां’ कहलाने वाले देश को नोच-नोच कर खा रहे हैं। कवि ने लिखा:

प्रदूषित परिवेश हुआ, और भ्रष्ट आचार।

बापू तेरे देश में, कैसी बही बयार।।

x x x

चरखा साध मौन है, तकली पड़ी उदास।

कर्ता सब नेता हुये, काते कौन कपास।। 2

भारतीय राजनीति जनसामान्य के शिकारगाह में परिवर्तित हो चुकी है। जिस प्रकार चूहे घरों की चूलों को और कौवे जनता की चमड़ी को कुतरने में लीन रहते हैं, उसी प्रकार आज के नेता देश को खाने में लगे हैं। रक्षक ही भक्षक बन गये हैं, फिर भला देश की प्रगति और रक्षा की किससे गुहार लगायें? इन स्वार्थी सत्ताधारियों के कारण देश की चूल्हे हिल गई हैं, जिससे पूरा राष्ट्र निरन्तर खोखला होता जा रहा है। स्वार्थ की पूर्ति के लिए ये राजनेता किसी भी नीति, किसी भी सिद्धान्त का परित्याग करने में जरा भी नहीं हिचकते। आज नेता बापू के बलिदान का मजाक उड़ा रहे हैं। उन्हें तो नेता शो-पीस की तरह सामने रखकर समाज को दोनों हाथों से लूटते हैं। कभी ‘राम’ नाम पे तो कभी अल्लाह के नाम पर आपसी झगड़े करवा कर अपनी राजनीतिक स्वार्थ को पूरा किया है। कवि ने लिखा है:

बन्दर बापू के बने, महज आज शो-पीस।

खड़ा सामने झूठ के, सत्य निपोरे खीस।

x x x

मन्दिर का मुद्दा बना, बापू तेरा राम।

राम नाम के मर्म से, आज किसे क्या काम।।

x x x

राजनीति ने यह किया, सबसे पहले काम।

सरेआम बेचा गया, बापू तेरा नाम।। 3

डॉ. ‘मानव’ ने वर्तमान राजनेताओं की नीतियों का पर्दाफाश किया है। संसद में बैठकर ये नेता लोग कानून इस प्रकार बनाते हैं, जिससे इनके दामन पर कोई आंच ना आए। यूँ कह सकते हैं कि कानून तो केवल आम आदमी के लिए बनते हैं। अंग्रेजों वाली नीति ‘फूट डालो राज करो’ का अनुशरण करते हुए समाज को बांटने का कार्य करते हैं। जैसा कि कवि ने लिखा:

गंगा-यमुना प्यार की, बहती थी हर-द्वार,

राजनीति ने खींच दी, बीचों-बीच दीवार।। 4

कवि का विचार है कि राजनीति और साम्प्रदायिकता एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। आज राजनीति समाज का एक हिस्सा बन चुकी है। वह जगह-जगह धर्म के नाम पर दंगे करवाकर अराजकता फैलाते हैं। वर्तमान में धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक साम्प्रदायिकताएं देश में अपनी चरम सीमा पर पहुंचती दृष्टिगोचर हो रही हैं और इन्होंने देश में दुश्मनों का सा रूप धारण कर लिया है। राजनेता जात-पांत के नाम पर भी लोगों को गुमराह करते हैं। घोटालों में शामिल होकर ये लोग रात-रात में करोड़पति बन जाते हैं। कवि ने लिखा है:

राजनीति के मंच का, इतना ही है सांच।

जात-पांत औ धर्म का, होता नंगा नाच।।

x x x

राजनीति तुमने किया, समचुच बड़ा कमाल।

नेता मालामाल है, जनता खस्ता हाल।।

x x x

घोटालों के रोग से, राजनीति है ग्रस्त।

राजनीति के कोप से, जनता सारी त्रस्त।। 5

डॉ. ‘मानव’ राजनीतिक परिदृश्य पर अपने विचार देते हुए कहते हैं कि आज का नेता केवल अपना घर भरना चाहता है, वह स्वार्थी और दम्भी हो गया है। उसे आम आदमी की कोई चिन्ता नहीं है। वह तो उसके लिए महज एक वोट बनकर रह गया है। नेताओं की कुर्सी के प्रति मोह की भावना उन्हें भ्रष्ट और निर्दयी बना रही है। तभी कवि ने कहा:

अब कुर्सी के रोग से, नेता बचा ने कोय।

सत्ता की संजीवनी, पीवे जीवे सोय।।

x x x

कुर्सी से कम ह नहीं, उनको कुछ स्वीकार।

कुर्सी ही तो सखे, उनका पहला प्यार।। 6

आज नेता जनता को मूर्ख बनाने के लिए आरक्षण रूपी ‘लाली पॉप’ थमाते हैं। इसी आरक्षण को वे प्रगति की राह बताते हैं। छोटी-छोटी जातियों के बेरोज़गार युवाओं के राजनेता अपने जाल में फंसा लेते हैं। उन्हें भविष्य का नेता बताकर भोली-भाली जनता को गुमराह करने के नुस्खे सिखाय जाते हैं।

आरक्षण की आग कुछ दिन तो जलती है, लेकिन धीरे-धीरे शांत हो जाती है। साल-दो-साल में फिर राजनीति की रोटियां सेंकने के लिए आरक्षण की आग जलाई जाती है। यह आग पूरे समाज के साथ पूरी दुनियां को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है। जैसा कि कवि ने माना है:

चन्द जातियों को मिला, आरक्षण का लाभ।

शेष ढूँढती ही रही, मरीचिका में आब।।

x x x

आरक्षण जारी रहा, और वर्ष-दर-वर्ष।

फिर भड़केगा एक दिन, नया वर्ग-संघर्ष।। 7

वर्तमान राजनीति और राजनीतिज्ञों के अमानवीय कृत्यों से लोकतन्त्र आये दिन शर्मसार होता है। लोगों की भावनाओं का गला घोटकर राजनीतिज्ञ लोकतन्त्र का काला अध्याय लिखने को तत्पर रहते हैं। परिणामस्वरूप विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र के गौरवपूर्ण मस्तक को आये दिन खून का घूंट पीकर झुकना पड़ता है। सत्ता के लालच में नेता कपड़ों की भांति पार्टी बदलते हैं। वोट हासिल करने के लिए जिस पार्टी का विरोध करते हैं और जीत भी जाते हैं, बाद में उसी पार्टी में मिलकर देश व प्रदेश की सरकार बनाकर मन्त्री पद प्राप्त कर लेते हैं। जनता के सामने किए वादे, एक पल में ही तोड़ देते हैं। भोली-भाली जनता पाँच साल में भूल जाती है और अगले चुनाव में फिर वही लोग किसी नई पार्टी से टिकट लेकर चुनाव के मैदान में आ जाते हैं। डॉ. 'मानव' ने इस दल-बदलू नेताओं के प्रति लिखते हैं:

किस-किसने तोड़ा नहीं, जनता का विश्वास।

दल-बदलू रचने लगे, नित्य नये इतिहास।। 8

x x x

दल-बदलू की उंगलियां, पांचों घी में आज।

कुर्सी मिली, द्विधा मिटी, संवरे सारे काज।। 9

राजनीतिज्ञों ने राष्ट्र को अपने रूपों में बांटने का बार-बार कुत्सित प्रयास किया है। अपनी राजनीतिक गोटियां फिट करने के लिए राजनेता आये दिन मुखौटे बदलते रहते हैं। सत्ता पर काबिज रहने के लिए ये राजनीतिज्ञ नित नया खेल खेलते हैं। लोकतन्त्र का मजाक उड़ाते हैं। जनता को लोकतन्त्र से चिढ़-सी हो गई है। कवि लोकतन्त्र को खेल समझने वालों के प्रति आग उगलत हुए कह उठते हैं:

नेता जी क्या खूब हैं, आप देश पर भार।

लोकतन्त्र के द्वार पे, बैठे कुंडली मार।।

x x x

सचमुच नेता देश के, सच्चे सफल जनाब।

कितने मुखड़े आपके, कितने चढ़े नकाब।। 10

डॉ. 'मानव' का विचार है कि आज नेता केवल अपना निजि स्वार्थ ही नहीं बल्कि अपने भाई-भतीजा, सगे-संबंधी को भी राजनीति में लाकर उनका स्वार्थ पूरा करते हैं। समाज को भय दिखाकर प्रशासनिक ढांचे पर भी अपनी हकूमत जमाते हैं। अफसरों को कठपुतली की भांति नचाते हैं। कोई अफसर विरोध करता है तो उसे या तो झूठे मुकदमें में फंसा देते हैं, या फिर उनका तबादला करवा दिया जात है। इस भय से अफसर लोग सदैव भयभीत रहते हैं। पुलिस, दलालों के साथ मिलकर नेता लोग आम जन का जीना दुबरा कर देते हैं।

लल्लू से लालू किया, कुर्सी कृपा-निधान।

कुर्सी पर कब्जा रहे, ऐसा करो विधान।। 11

x x x

नेता, पुलिस, दलाल का, हुआ आज गठजोड़।

लगा दांव पर देश है, मची लूट की होड़।। 12

डॉ. 'मानव' का विचार है कि राजनीति साहित्य के क्षेत्र में भी अपना कदम बड़ा चुकी है। साहित्यिक पुरस्कारों में राजनीति हावी होती जा रही है। सरकार द्वारा विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से रचनाओं पर दिए जाने वाले पुरस्कारों में घपले होते जा रहे हैं। रचनाओं को श्रेष्ठ पुरस्कार देने के लिए कमेटी बनाई जाती है। जो कवि या लेखक बड़े-बड़े राजनेता और अफसर की जी हजरी करते हैं। उन्हें ये पुरस्कार मिल जाते हैं। यद्यपि पुरस्कार परिषद् निर्णायक का नाम गोपनीय रखती है लेकिन राजनेता इनका पता चलाकर मनचाहे साहित्यकार को पुरस्कार दिला देते हैं।

समाज का प्रत्येक हिस्सा भ्रष्टाचार की आग में जल रहा है। इसका उत्तरदायी सिर्फ राजनेताओं को ही समझा जाता है। राजनेता अपना स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए समाज के प्रत्येक क्षेत्र में रूचि लेता है। न्यायालय, पुलिस, शिक्षा, प्रशासन, बिजली, जल, साहित्य, स्वास्थ्य और न जाने कितने विभाग होते हैं, जहां इनका हाथ नहीं होता। राजनेता

अवसरवादिता और भ्रष्टाचार दोनों में प्रमुख रूप से लिप्त रहते हैं। आज के नेता मुखौटेबाज हैं जो गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। उनका धर्म-ईमान सब कुर्सी है। कुर्सी के लालच में मंच पर अने कसमें-वादे किए जाते हैं। घड़ियाल आंसु बहाए जाते हैं। हमारी जनता जिन नेताओं पर विश्वास करके मंत्री पद पर बैठाती है, वही नेता अपने देश को टक सेर में बेच देते हैं। उनका विचार है कि जैसे चूहे चूल को, और कौआ चाम को कुतरता है, वैसे ही नेता देश को कुतरते हैं। वर्तमान युग राजनीति व राजनेताओं को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। कर्मठ व ईमानदार नेता भी अपने आपको बचा नहीं पाता। आज नेता और अपराध का रिश्ता चोली-दामन का बन चुका है। शायद ही कोई ऐसा नेता हो जिसपर भ्रष्टाचारी, बलात्कार, रिश्वतखोरी, कत्ल आदि का मुकदमा ना चल रहा हो। नेता स्वार्थ की आम में जलते हुए पूरे देश व राष्ट्र को दाव पर लगा देते हैं।

डॉ. ‘मानव’ को लगता है राजनीति के मंच पर ये नेता लोग अनेक भूमिका निभाते हैं। कभी वे धर्म के पालक, कभी समाज के ठेकेदार, तो कभी अपने-आपकी तुलना गवार से कर बैठते हैं। जनता जब नेताओं से अपने दुख दूर करने की फरियाद करती है तो ये नेता लोग गूंगे और बहरे बन जाते हैं। खादी के सफेद कपड़े पहनते हैं, मगर दिल इनका काला होता है। जनता के बने नायक चुनाव के बाद खलनायक बन जाते हैं। देश को दोनों हाथों से लूटने वाले लूटेरे बन जाते हैं।

राजनीति आज जीवन का सर्वाधिक क्रूर पक्ष है मनुष्यता के सुख संरक्षण के लिए रची गई त्याग और सेवाभावी राजनीति सुदूर अतीत से व्यक्ति के हित-पोषण में दुष्प्रयुक्त होती आ रही है। सामन्तकाल में सत्ता की रक्षा के लिए नर-संहार हुए, आज भी हो रहे हैं। जनहित का अमृत-कलश स्वार्थी और सत्ता लोलुप राजनेताओं की घिनौनी मानसिकता की अंधेरी कोठरी में कैद है। जनहित का दावा करने वाले किस प्रकार जनता का सर्वनाशा करने पर तुले हैं, यह सर्वविदित है। इस कटु यथार्थ को डॉ. ‘मानव’ ने निम्नांकित त्रिपदियों में सफलता-पूर्वक चित्रण किया है। आजादी प्राप्ति से देश की जनता को क्या-क्या लाभ होंगे, इसके सन्दर्भ में, हमारे नेताओं ने, अनेक सुनहरे स्वप्न दिखाये थे। उनमें से अने नेताओं ने निष्ठापूर्वक उसके लिए प्रयत्न भी किये। किन्तु आज वैसे नेता हैं कहां? आज तो कुर्सी प्राप्त कर जनता के धन को अधिक-से-अधिक बटोरने की होड़-सी लगी है और इसके लिए विभिन्न पक्ष अपने सिद्धांतों की बलि देने से भी नहीं हिचकते। स्वाभाविक है कि जनता की वेदना को महसूस करने वाला कवि इस तथ्य को, विभिन्न माध्यमों से उजागर करे। डॉ. ‘मानव’ ने अपनी अन्य काव्य-विधाओं के साथ-साथ, हाइकुओं के माध्यम से भी, कहीं अभिधा

में और कहीं व्यंजना के माध्यम से, ऐसे स्वार्थी नेताओं के चेहने का नकाब हटाने का कार्य किया है।

राष्ट्रीय भावना जागृत करने के लिए स्वदेशी पर जोर दिया महात्मा गांधी ने, मगर खादीदार नेताओं के भ्रष्टाचार से खादी बदनाम हो गई। समस्त भारत में नेताओं की बातों को ही अहमियत दी जाती है। उनकी बातों को सच्चा माना जाता है। प्रशासन भी उनके आगे कठपूतली बनकर कार्य करता है। संसद में बहस करते समय यूं लगता है जैसे नाटक-मण्डली में कार्य कर रहे हो। नेता स्वार्थ और सत्ता में लीन रहता है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शायद ही कोई व्यक्ति हो जा राजनीति से अछूता हो। कवि का विचार है कि आज हर व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे राजनीति जुड़ा हुआ है। राजनीति का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण समाज का हर वर्ग सत्ताधारियों हाथों शोषण का शिकार हो रहा है। समाज के भोले-भाले लोगों को गुमराह किया जाता है, जो जनता उन्हें सत्ता पे बैठाती है, उसे ही नरक की ओर धकेल जाता है, वर्तमान नेता निजी स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए समस्त राष्ट्र को टके सेर बेच देते हैं। नैतिकता और संस्कृति को त्याग कर मानवीय मूल्यों का हनन कर रहे हैं। ये लाग आज जनमानस को कभी धर्म के नाम पर, तो कभी भाषा अथवा क्षेत्र के नाम पर लड़वाते हैं। इनकी अनीतिपूर्ण चालों से जहां आम आदमी निरन्तर आर्थिक दुष्चक्रों में फंसा चला जा रहा है, तो वहीं राजनेताओं के खातों का आकार, दिनों-दिन गुणात्मक रूप से विशाल कोश में तब्दील होता जा रहा है। उनका मात्र एक लक्ष्य सत्ता प्राप्त करना होता है। जैसे एक चूहा कागजों को कुतरता है, उसी प्रकार नेता देशा को कुतरते हैं। संसद में बैठे नेता बहस के नामपे नाटक करते हैं। कानून बनाते समय सर्वप्रथम अपने हित को ध्यान में रखते हैं। देश को धार्मिक, सामाजिक तथा साम्प्रदायिक दंगों में धकेलने का कार्य करते हैं। कभी आरक्षण के नाम पर तो कभी मन्दिर-मस्जिद के नाम पर लड़वाने का काम करते हैं। पुलिस, प्रशासन, न्यायालय, शिक्षण, बैंक, खेल, स्वास्थ्य, जल, बिजली और न जाने कितने क्षेत्र हैं जहां पर राजनेता पर अधिकार समझकर भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी फैलाते हैं। ईमानदार लोगों को झूठे मुकदमों में फंसाया जाता है। भाई-भतीजेवाद की राजनीति करते हैं। चन्द पैसों के लालच में जनता को धोखा देकर अपना दल बदल लेते हैं। अनेक मुखौटे पहनकर हर बार जनता को फंसा लेते हैं। अतः कह सकते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र पर राजनीति हावी हो गई है जो अपनी मनमानी से राष्ट्र को खोखला कर रहे हैं।

सन्दर्भ- सूची

1. डॉ. रामनिवास 'मानव' 'बोलो मेरे राम', पृष्ठ-20
2. वही, पृष्ठ-16
3. वही, पृष्ठ-16
4. वही, पृष्ठ-13
5. वही, पृष्ठ-27
6. वही, पृष्ठ-31
7. वही, पृष्ठ-40
8. वही, पृष्ठ-30
9. वही, पृष्ठ-41
10. वही, पृष्ठ-31
11. वही, पृष्ठ-34
12. वही, पृष्ठ-32

Corresponding Author

Santosh Kumari*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi
Dayanand University, Rohtak, Haryana

skumarlyricst@gmail.com